Q:- लिंग की असमानता में पाठ्यक्रम की भूमिका।

उत्तर:- पाठ्यक्रम का स्थान शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है क्योंकि जैसा की हम जानते है की शिक्षा एक सउद्देश्य प्रक्रिया है और वह अपने उद्देश्यों की पूर्ती पाठ्यक्रम के द्वारा करती है। शिक्षण उद्देश्य जैसा होगा पाठ्यक्रम भी उसी प्रकार होगा।

पूर्णतीपूर्ण लिंग की समानता और भूमिका को स्पष्ट करने के लिए इसके अर्थ को जानना आवश्यक है जैसे- पाठ्यक्रम के चार अर्थ होते है:-

(i) शाब्दिक अर्थ
(ii) संकुचित अर्थ
(iii) परिभाषीय अर्थ
(iv) व्यापक अर्थ

* शाब्दिक अर्थ :-

अंग्रेजी में curriculum शब्द प्रयुक्त किया जाता है जो की लैटिन के currer से बना है जिसका दौड़ का मैदान है

curriculum — currer — Ground of Race.

* इस प्रकार curriculum एक ऐसा मैदान है जिसके इर्द-गिर्द बालकों की क्रियाएँ सम्पादित होती है

* संकुचित अर्थ :-
इसका मतलब course सब कोई है जिसके आधार पर अध्ययन अध्यापन कार्य सम्पन्न होता है।

* परिभाषीय अर्थ :- इसमें अनेक परिभाषाएँ आती है -

कनिंघम के अनुसार " पाठ्यक्रम शिक्षक के हाथ में एक साधन है जिससे वह अपने विद्यालय में अपने उद्देश्य के अनुसार अपने छात्रों को कोई भी रूप दे सकता है"

फ्रोबेल के अनुसार " पाठ्यक्रम में समस्या अनुभव निहित है जिसकी विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है"

" शिक्षा आयोग ने भी पाठ्यक्रम के अधिगम अनुभव की वह समाग्री बतलाया है जो विद्यालय द्वारा छात्रों को विद्यालय में उसके बाहर की बहुमुखी क्रियाएँ द्वारा प्रदान की जाती है ये समस्त क्रियाएँ विद्यालय के देख-रेख में संचालित की जाती है"

जैसा की हम पाठ्यक्रम की परिभाषाओं और उसके व्यापक अर्थ से देखते है कि चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता में इसके अहम भूमिका है क्योंकी इसका सिधा असर बालिका पर पड़ती है और देश का विकास एक तरह से रुक जाती है

Scanned with CamScanner

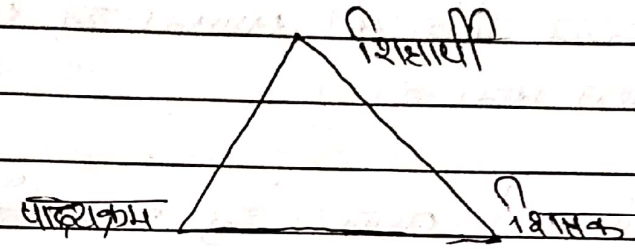

चुनौतीपूर्ण लिंक की समानता और उसकी भूमिका के प्रस्तुतीकरण के लिए विद्यालय अत्यधिक महत्वपूर्ण है और विद्यालय के समस्त क्रिया ही पाठ्यक्रम के इर्द-गिर्द घूमती है

जॉन डी.वी के अनुसार " अमेरिका प्रयोजनवादी के इसी कारण शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया माना है

क्योंकी इसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम होते हैं जैसा की हम देखते हैं बालकों के सर्वांगीण विकास, आदर्श नागरिकता का विकास, सभ्य समाज और असमानताओं की समाप्ती में पाठ्यक्रम का अलग महत्व और आवश्यकता है

इस प्रकार पाठ्यक्रम का चुनौतीपूर्ण लिंग की असमानता और इसकी सशक्त भूमिका के प्रस्तुतीकरण निम्न प्रकार है—

(i) पाठ्यक्रम में पाठ्य विवरण निहित होता है जो सउद्देश्य होता है जो की विवरण के द्वारा लिंगीय असमानता दूर करने का उद्देश्य भी समाहित होता है

(ii) पाठ्यक्रम को अभिन्न अंग co-curricular Activities माना जाता है जिससे बालक बालिकाओं में अंत-क्रिया होती है और आपसी समझ की विकास होती है जिसके द्वारा लिंग की समानता में सहयोग मिलती है

Scanned with CamScanner

(iii) पाठ्यक्रम बिना किसी लिंगीय भेद-भाव के सबके समानता के सिद्धांत को आधार बनाकर किया जाता है जिससे लिंग की समानता को बल मिलता है।

(iv) पाठ्यक्रम में चुनौतीपूर्ण लिंग की विशिष्ट रुचियों तथा आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है जिससे उनकी शिक्षा और समानता में वृद्धि होती है।

(v) इसके अंतर्गत लिंग की समानता हेतु सामग्री का समावेश किया जाता है।

(vi) इसमें लिंग की समानता हेतु आपस में मिलजुलकर रहने तथा क्रिया करने के प्रयाप्त अवसर प्राप्त होते हैं।

(vii) इसमें लिंग की समानता और उनकी सशक्त भूमिका के प्रस्तुतीकरण के लिए बालिकाओं को भी सामान्य अवसर प्रदान किये जाते हैं जिससे वे अपनी योग्यता एवं प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें।

(viii) इसके निर्माण का आधार मनोवैज्ञानिक होता है जिसके द्वारा बालिकाएँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी सशक्त होकर अहम भूमिका निभा सके।

(ix) पाठ्यक्रम को व्यवहारिक जीवन से जोड़ने पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है जिससे भी यह चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता में वृद्धि हो रही है।

इस प्रकार निरंतर अपनी चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता के कार्यों का सम्पादन और उनकी भूमिका के प्रस्तुतिकरण के अन्य संस्थाओं, सरकारी एवं गैर-सरकारी

के साथ मिलकर कार्य कर रहा है पाठ्यक्रम विद्यालय की समस्त गतिविधियों तथा सफल विकास हेतु उत्तरदायी है इसलिए इसके निर्माण के समय कुछ बातों को ध्यान में रखना अति आवश्यक है जैसा की —

(i) पाठ्यक्रम बालकों की अवस्था तथा आवश्यकता के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए।

(ii) इसके निर्माण का आधार मनोवैज्ञानिक होना चाहिए।

(iii) इसके निर्माण के लिए व्यापक दृष्टिकोण तथा लचीलापन का अनुसरण करना चाहिए।

(iv) यह शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ती में सहायक होना चाहिए।

(iv) इसको पाठ्य सहगामी क्रियाओ शिक्षण पद्धति तथा पूरक पठन सामग्री का संकेत होना चाहिए।

(v) पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए की जाति, धर्म भाषा तथा लिंग आदि की के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास कर सके।

अतः जैसा की हम देखते है लैंगिक असमानता आज भी विद्यमान है और समस्त भूमिका के प्रस्तुतीकरण में अनेक बाधाएं है फिर भी पाठ्यक्रम के प्रसार के कारण न्यायोचितपूर्ण लिंग की शैक्षिक प्रगति हुई है इसके पीछे एक कारण

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रम में आया बदलाव भी है

Scanned with CamScanner